श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - २

जुलाई - २०२१

गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. इस तरह से ये दोनों शासन के ही कार्य..................... से हो पायेगें ।
२. वायुकाय के दंडक में उत्तर वैक्रय शरीर अंगुल के .... भाग जितना होता है ।
३. चार शरणों को स्वीकार कर.................. के ध्यान में लीन बने ।
४. सभी भय श्री पार्श्वनाथ जिनेश्वर के नाम का.................. करने से शांत हो जाते है, शम जाते है ।
५. भव्य जीव................... संसार बाकी रहता है, तब यह सम्यकत्व पाता है ।
६. स्थूलिभद्र मुनि ने उस वेश्या को प्रतिबोधित कर.................. श्राविका बनाया ।
७. .... का शरीर एक हजार योजन से कुछ अधिक होता है ।
८. .... होते ही श्रेयांसकुमार के हाथो प्रभु का सुझते इक्षुरस से पारणा होता है ।
९. ऐसे महाकाय और जिसने नखरुपी वज्र के घात से गजेन्द्र के .... के विस्तार को विदारा है ।
१०. आहारक शरीर की................... मुठबंद एक हाथ जितनी होती है ।
११. परमात्मा के शासन की ....गहनता एवं दीर्घदृष्टि उन्हें स्पर्श कर गयी ।
१२. अविरति गुणस्थान, मिथ्यात्व गुणस्थान, सास्वादन गुणस्थान ये तीन गुणस्थान............में जीव के साथ जाते है ।
१३. .... जैसे नेत्रवाले जिसने अत्यंत मुख फाडा है ।
१४. यह .... एवं संसार दुःख के लिये ही है ।
१५. .... याने मिथ्यात्व के उदय में अंतर, रुकावट खडी करना ।
१६. वररुचि इस तरह..................... भी हुआ और आवक भी बंद हो गयी ।
१७. मिश्र गुणस्थान में रहा हुआ जीव................... अथवा मिथ्यात्वी बनकर मरता है ।
१८. ग्रंथिभेद के बाद तुरंत सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है, तब जीव को .... होता है ।
१९. .... रचकर लोगो को ज्योतिष कहते और अपनी आजिवीका चलाने लगे ।
२०. .... सम्यक्त्वी जीव मनुष्य अथवा देवगति में जाता है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. अर्धशुद्ध पुंज यह कौनसा मिथ्यात्व है ?
२. सर्व स्थानो पर किसकी निंदा होने लगी ?
३. सर्वार्थसिद्ध देवलोक में कौनसे मुनि गये ?
४. जो जीव उभय भाव में होता है, उसे कौनसा भाव होता है ?
५. सूत्रपाठ के लिये अयोग्य किसे घोषित किया गया ?
६. पार्श्वजिन पाप का क्या करते है ?
७. सर्वज्ञाक्त भावो के अस्तित्व की विचारणा को क्या कहते है ?
८. सेठ ने अज्ञानतावश किसका उपार्जन किया ?
९. दुष्काल पडने से कौनसा बारहवां अंगसूत्र विस्मृत होने लगा था ?
१०. पूर्वभव के अभ्यास से जीवादि नवतत्वों में श्रद्धा होना क्या है ?
११. गोचरी की विधि के जानकार बनकर दोष टालने हेतु प्रयत्नशील बनना किसका पंथ है ?
१२. तीन प्रकार के करण क्या प्राप्त करने में सहायक है ?
१३. गर्भज तिर्यंच को कौनसा शरीर नहीं होता है ?
१४. कोई भी जीव कौनसे गुणस्थान मे नहीं मरता ?
१५. किसके उदय से आत्मा का सम्यक्त्व गुण दबा हुआ था ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. प्रमुख २) दुहओ ३) पत्थिव ४) मारंभे ५) म्रियते ६) जलण ७) महुपिंग ८) अहिय ९) मइंद १०) त्रयास्त्रिशत्सागरा
११. समुद्यूति १२. रिउ १३) वेउव्विय १४) मुदया १५) गइंदं १६) तदर्ध १७) जहन्ना १८) पविद्धु १९) प्रशम २०) ह्यायुर्ये

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) रागद्वेष	१) बृहत् कल्प	६) शास्त्र श्रवण	६) वनस्पति
२) पानी	२) तिर्यंच	७) मध (शहद)	७) पू.आ. रत्नशेखरसूरि
३) सचित	३) नेत्र	८) यथाप्रवृतिकरण	८) चोर
४) सिंह	४) भय	९) श्रीभद्रबाहु स्वामी	९) अकाम निर्जरा
५) ९०० योजन	५) अधिगम सम्यक्त्व	१०) गुणस्थान	१०) स्थूलभद्रमुनि

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. अनिवृतिकरण की प्रकिया कितने मीनिट की है ?
२. भद्रबाहुस्वामी कितने वर्ष तक मुनिरुप में रहे ?
३. नारकी की उत्कृष्ट अवगाहना कितने धनुष्य की है ?
४. कुल मिलाकर कितने गुणस्थान परभव में साथ नहीं चलते ?
५. श्रीस्थूलभद्रमुनि युगप्रधान आचार्य के रुप में कितने वर्ष तक रहे ?
६. देवताओ के १३ दंडक में उत्तर वैक्रिय शरीर कितने योजन का होता है ?
७. कितनी आवलिका बाकी रहती है तब आगाल बंद हो जाता है ?
८. कितने प्रकार के भय श्रीपार्श्वनाथ प्रभु के नाम का किर्तन करने से शांत हो जाते है ?
९. मिश्र गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का बंध होता है ?
१०. प्राकृत भाषा में रचित 'वसुदेव चरियं' कितने श्लोक श्लोक प्रमाण है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✔) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. आठवीं पाट परम्परा तक श्वेताम्बर और दिगंबर समान है, इससे आगे अलग हो जाते है ।
२. तेउकाय की उत्कृष्ट अवगाहना अंगुल के असंख्यातवे भाग जितनी होती है ।
३. जयणा पालन में परमात्मा के शासन में बतायी आहारविधि सहायक बनती है ।
४. शक्कर और दही के संयोग से जो तीसरा रस उत्पन्न होता है, उसे शिखरण कहते है ।
५. स्थूलभद्र मुनि ने दो वस्तु कम ऐसे चौदह पूर्व का अभ्यास किया ।
६. तैजस, वैक्रिय शरीर सम्पूर्ण आत्मप्रदेशों मे व्याप्त होने से जीव के शरीर जितनी अवगाहना होती है ।
७. जब तक तीव्र राग-द्वेष की गांठ - ग्रंथी है तब तक प्रथम यथाप्रवृतिकरण है ।
८. आठवें दिन बालक की मृत्यु बिल्ली से होगी, इससे आपको किस तरह खुशी व्यक्त करे ?
९. प्रत्याख्यानी कषाय के उदय से व्रत-पच्चक्खाण स्वीकार नहीं कर सकते ।
१०. अंतरकरण के पश्चात यदि शुद्ध पुंज उदय में आये तो क्षायोपशमिक सम्यक्त्व प्राप्त होता है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. ज्ञानी भगवंत कहते है की मिथ्यात्व जीव को शिव नहीं बनने देता ।
२. हिंसा आदि में निमित्तभूत न बनने के लिये साधु को वो वस्तु लेना नहीं कल्पता ।
३. जिनशासन का ज्ञान का खजाना ज्यादा सरल, समृद्ध बनाया है ।
४. क्षायिक सम्यक्त्वी जीव आयुष्य का बंध न पडा हो तो उसी भव में अथवा तीसरे-चौथे भव में मोक्ष जाता है ।
५. फिर भी मुनि कोशा वेश्या के यहां गये और चारित्र भावना से पतित हुए ।
६. इस सामान्य नियम के पीछे भी आहार-पानी में किसी को अंतरायभूत नहीं होने की ही भावना छुपी हुई है ।
७. एक योजन चउरिन्द्रिय के शरीर की उंचाई सूत्रानुरुप है ।
८. श्रीभद्रबाहुस्वामी स्थूलभद्रमुनि सहित विचरण करते हुए पाटलीपुत्र के उद्यान में पधारे ।
९. छोटी नजर आती बात कभी कभी कितनी भयानक बन जाती है ।
१०. मिश्र गुणस्थान में रहा हुआ जीव दूसरे भव का आयुष्य नहीं बांधता ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. मिश्र गुणस्थान व उसकी विशेषताओ के बारे में लिखिये। २) साधु को कब-कब गोचरी लेना नहीं कल्पता ?
३. श्रीभद्रबाहुस्वामी ने क्या-क्या रचकर शासन की सेवा की है ? ४) छठ्ठी गाथानुसार अवगाहना द्वार समझाईये ?
५. श्री पार्श्वनाथ प्रभु के नाम कीर्तन का क्या प्रभाव है ?

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com